वस्तुनिष्ठ परीक्षण
(OBJECTIVE TYPE TEST)

लिखित परीक्षण का दूसरा रूप वस्तुनिष्ठ परीक्षण है। वस्तुनिष्ठ प्रकार की परीक्षणों का आविष्कार मूलरूप से निबन्धात्मक परीक्षण के दोषों को दूर करने के लिये किया गया। वस्तुनिष्ठ परीक्षण वे परीक्षण होते हैं, जिनमें किसी एक प्रश्न का एक निश्चित उत्तर होता है और उस उत्तर के अलावा अन्य सभी उत्तर गलत होते हैं। इनमें उत्तर एक या दो-चार शब्दों में लिखना होता है। इसमें छात्रों के उत्तर या निष्कर्ष की वस्तुनिष्ठता की जाँच की जाती है। वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में प्रश्नों की संख्या बहुत अधिक होती है, जिससे प्रश्न-पत्रों का फैलाव बढ़ जाता है, परन्तु प्रश्न छोटे-छोटे ही रखे जाते हैं। इससे प्रश्न पाठ्य-वस्तु के अधिकांश भाग से सम्बन्धित हो जाते हैं। आधुनिक युग में इस प्रकार के प्रश्नों का प्रचुरता के साथ उपयोग हो रहा है। इसके बढ़ते हुए प्रचलन व प्रयोग का मुख्य कारण इस प्रकार के प्रश्नों में व्याप्त इनके गुण हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकार—वस्तुनिष्ठ प्रश्न निम्न प्रकार के होते हैं—

(1) स्मरण प्रश्न (Recall Type Questions)

(2) बहुनिर्वचन प्रश्न (Multiple Type Questions)

(3) तुलनात्मक प्रश्न (Matching Type Questions)

(4) सत्यासत्य प्रश्न (True-False Questions)

(5) रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न (Completion Type Questions)

(6) वर्गीकरण प्रश्न (Classification Type Questions)

(1) स्मरण प्रश्न (Recall Type Questions)—जो प्रश्न छात्रों की स्मरण शक्ति की परीक्षा करने हेतु किये जाते हैं, वे स्मरण प्रश्न कहलाते हैं। उदाहरण के लिये नीचे कुछ प्रश्न दिये जा रहे हैं—

(i) भारत की राजधानी का नाम बताओ।

(ii) तुम्हारे राज्य की मुख्य फसल क्या है ?

(iii) भारत में गेहूँ कहाँ अधिक पैदा होता है ?

(2) बहुनिर्वचन प्रश्न (Multiple Type Questions)—इस प्रकार के प्रश्न देते समय एक तो प्रश्न दिया जाता है तथा उसके कई सम्भावित उत्तर दिये जाते हैं। इन कई सम्भावित उत्तरों में से सबसे अधिक उपयुक्त तथा सही होता है। यही अधिक उपयुक्त उत्तर प्रश्न का सही उत्तर माना जाता है। उदाहरण के लिये नीचे एक प्रश्न किया जा रहा है—

प्रश्न—पूँजी किसे कहते हैं ?

(नीचे दिये उत्तरों में से जो उपयुक्त हो उस पर चिन्ह लगाओ)

Scanned by TapScanner

(1) धन

(2) रुपया-पैसा

(3) सम्पत्ति

(4) भूमि के अतिरिक्त धन का वह हिस्सा जो और धन कमाने में लगा है।

(3) तुलनात्मक प्रश्न (Matching Type Questions)—इस प्रकार के प्रश्नों में समस्त सामग्री को दो भागों में विभक्त कर दिया जाता है। एक भाग को पहले व्यवस्थित रूप में रखते हैं तथा दूसरे भाग को प्रथम भाग के सामने अव्यवस्थित रूप में रखते हैं, छात्रों से इस अव्यवस्थित अवस्था को व्यवस्थित करने को कहा जाता है। उदाहरण—

निर्देश—नीचे प्रान्तों के नाम दिये गये हैं, उनके सामने अव्यवस्थित शृंखला में प्रान्तों के मुख्य उद्योगों के नाम दिये गये हैं। इस अव्यवस्थित शृंखला को व्यवस्थित करके लिखो—

उत्तर प्रदेश	कपड़ा
बिहार	चमड़ा
बंगाल	चीनी
उड़ीसा	जूट
महाराष्ट्र	लोहा

(4) सत्यासत्य प्रश्न (True-False Questions)—इस रीति के अनुसार छात्रों को कुछ सत्य तथा कुछ असत्य कथन दिये जाते हैं। फिर उनमें "हाँ" अथवा "नहीं" के उत्तर द्वारा कथनों की सत्यता तथा असत्यता पूछी जाती है। उदाहरण के लिये नीचे कुछ प्रश्न दिये जाते हैं।

(1) अजमेर राजस्थान की राजधानी है। उत्तर—"हाँ" अथवा "नहीं"।

(2) उत्तर प्रदेश में चीनी उद्योग अधिक है। उत्तर—"हाँ" अथवा "नहीं"।

(3) अभ्रक भारत में सबसे अधिक होती है। उत्तर—"हाँ" अथवा "नहीं"।

इस प्रकार के कथनों के उत्तर में "हाँ" अथवा "नहीं" दिये जाते हैं। सही कथनों के उत्तर में से "नहीं" काट दिया जाता है तथा गलत कथनों के उत्तर में से "हाँ" काट दिया जाता है।

(5) रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न (Completion Type Questions)—इस रीति में कुछ अपूर्ण कथन दिये जाते हैं तथा छात्रों से उन्हें पूरा करने को कहा जाता है। निम्न प्रकार के कथनों के कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

(1) भारत में जूट उद्योग ..... प्रान्त में अधिक है।

Scanned by TapScanner

(2) रूप परिवर्तन को ..... कहते हैं।

(3) वस्तु की माँग बढ़ने से उस वस्तु का मूल्य ..... जाता है।

(4) भारत ..... प्रधान देश है।

(6) वर्गीकरण प्रश्न (Classification Type Questions)—इस प्रकार की पद्धति के अनुसार एक समूह में कुछ पद दिये जाते हैं। इन पदों में एक को छोड़कर सभी पद एकसमान होते हैं। छात्रों से पृथक् पद को अलग करने को कहा जाता है। अलग करने से हमारा तात्पर्य उस भिन्न पद या शब्द को काट देने से या रेखांकित करने से है। उदाहरण—

निर्देश—नीचे प्रत्येक शृंखला में दिये गये पदों में एक पद असंगत है। असंगत पद को रेखांकित करो—

(1) अर्थ, मुद्रा, धन, पूँजी, नागरिकता।

(2) नागरिकशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य।

(3) आदमस्मिथ, मार्शल, अलाउद्दीन खिलजी, रॉबिन्स मेहता।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के गुण
(Merits of Objective Type Tests)

(1) ये परीक्षण विश्वसनीय होते हैं।

(2) इन परीक्षणों के द्वारा तीव्र तथा मन्दबुद्धि वाले विद्यार्थियों में सरलता से भेद किया जा सकता है।

(3) ये परीक्षण उसी वस्तु का मापन करते हैं, जिसके मापन के लिये इनका निर्माण किया जाता है।

(4) इन परीक्षणों का अंकन सरलतापूर्वक किया जा सकता है।

(5) इन परीक्षणों के परिणामों को देखकर विद्यार्थियों के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है।

(6) ये परीक्षण समस्त विषय क्षेत्र का मापन करते हैं।

(7) इन परीक्षणों पर परीक्षक की आत्मनिष्ठा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(8) इन परीक्षणों के द्वारा विद्यार्थियों के तथ्यात्मक व ज्ञानात्मक ज्ञान की जाँच की जाती है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के दोष
(Demerits of Objective Type Tests)

(1) ये परीक्षण विद्यार्थियों की उच्चतर बौद्धिक उपलब्धियों की जाँच करने में असफल रहे हैं।

Scanned by TapScanner

(2) इन परीक्षणों के प्रश्न-पत्रों का निर्माण करना बहुत-ही कठिन कार्य है।

(3) इन परीक्षणों से विद्यार्थियों में नकल करने की सम्भावनायें बढ़ती हैं।

(4) इन परीक्षणों में विद्यार्थी विषय-वस्तु का गहराई से अध्ययन नहीं करते हैं।

(5) इन परीक्षणों में विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर अनुमान लगाकर अधिक देते हैं।

(6) ये प्रश्न पूर्णतया तथ्यात्मक सूचनाओं पर ही जोर देते हैं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण की विशेषतायें

(Characteristics of Objective Type Tests)

(1) वैधता—वैधता का अर्थ है कार्य-कुशलता, जिसमें कोई परीक्षण उस तथ्य का मापन करता है, जिसके लिये वह बनाया गया है।

क्रोनबैक के अनुसार, "किसी परीक्षण की वैधता उसकी वह सीमा है कि जिस सीमा तक वह वही मापता है कि जिसके लिये उसका निर्माण किया गया है।"

(2) विश्वसनीयता—विश्वसनीयता का अर्थ है कि किसी एक परीक्षण को एक ही समूह पर बार-बार किये जाने पर अंकों में समानता का पाया जाना।

गैरिट के अनुसार—"एक परीक्षण अथवा मानसिक यंत्र की विश्वसनीयता उस संगति पर निर्भर करती है, जो उन व्यक्तियों की योग्यता का अनुमान लगाती है, जिनके लिये उसका प्रयोग होता है।"

(3) वस्तुनिष्ठता—वस्तुनिष्ठता के अभाव में कोई परीक्षा विश्वसनीय तथा वैध नहीं हो सकती है। यदि किसी परीक्षण के द्वारा विद्यार्थियों की निष्पत्ति का मूल्यांकन निष्पक्ष भाव से किया जाता है तो उस परीक्षण को वस्तुनिष्ठ कहते हैं।

(4) विभेदीकरण—वस्तुनिष्ठ परीक्षण विभेदकारी होते हैं, क्योंकि इन परीक्षणों में ऐसे प्रश्नों को चुना जाता है, जो मंद, प्रखर तथा औसत बुद्धि वाले विद्यार्थियों में सरलतापूर्वक विभेद करते हैं।

(5) अंकन में सरलता—इन परीक्षणों को उत्तर-पुस्तिकाओं का अंकन सामान्य व्यक्ति भी कर सकता है, क्योंकि इन परीक्षणों में अंक देने के लिये निर्देश दिये रहते हैं।

Scanned by TapScanner